मैं क्यों लिखता हूँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» लेखन की आंतरिक विवशता

प्रश्न 1 (आसान). आंतरिक विवशता से आप क्या समझते हैं?
उत्तर – लेखक के अंदर से आने वाली लिखने की प्रेरणा या बेचैनी।

प्रश्न 2 (आसान). क्या लेखक सिर्फ पैसे के लिए लिखते हैं?
उत्तर – नहीं, आंतरिक विवशता भी एक बड़ा कारण है।

प्रश्न 3 (मध्यम). लेखक अपनी आंतरिक विवशता से मुक्ति कैसे पाता है?
उत्तर – लिखकर, अपने मन की बातों को कागज़ पर उतारकर लेखक उस विवशता को पहचानता और उससे मुक्त होता है।

प्रश्न 4 (कठिन). क्या आंतरिक विवशता और बाहरी विवशता में कोई अंतर है? स्पष्ट करें।
उत्तर – हाँ, आंतरिक विवशता लेखक के स्वयं के भीतर से आती है (आत्म-अभिव्यक्ति), जबकि बाहरी विवशता बाहरी कारणों से होती है, जैसे प्रसिद्धि, पैसे या किसी के कहने पर लिखना।

» बाहरी दबाव और उनका प्रभाव

प्रश्न 5 (आसान). अगर तुम्हें परीक्षा में पास होने के लिए पढ़ना पड़े, तो यह किस प्रकार का दबाव है - आंतरिक या बाहरी?
उत्तर – यह बाहरी दबाव है क्योंकि तुम्हें परीक्षा में पास होना है, जो बाहर की एक शर्त है।

प्रश्न 6 (आसान). लेखक को पैसे की ज़रूरत हो, तो वह किस प्रकार के दबाव में लिखेगा?
उत्तर – यह आर्थिक आवश्यकता से जुड़ा बाहरी दबाव होगा।

प्रश्न 7 (मध्यम). एक कवि को किसी त्योहार पर कविता लिखने का आदेश मिले, तो क्या यह हमेशा सिर्फ एक दबाव ही रहेगा, या कुछ और भी हो सकता है?
उत्तर – यह बाहरी दबाव है। पर हो सकता है कि त्योहार की भावना से जुड़कर, कवि के मन में कोई नया विचार आए और वह कविता उसकी आंतरिक प्रेरणा का हिस्सा बन जाए।

प्रश्न 8 (कठिन). लेखक के अनुसार, बाहरी दबाव कब 'भीतरी उन्मेष का निमित्त' बन जाता है? उदाहरण सहित समझाओ।
उत्तर – लेखक कहते हैं कि बाहरी दबाव तब 'भीतरी उन्मेष का निमित्त' बन जाता है जब वह लेखक को किसी विषय पर सोचने या कुछ नया अनुभव करने के लिए मजबूर करता है, जिससे उसकी आंतरिक प्रेरणा जाग उठती है। जैसे, अगर कोई संपादक किसी लेखक को भूकंप पर लिखने को कहे। लेखक पहले नहीं लिखना चाहता, पर जब वह भूकंप पीड़ितों से मिलता है, उनके दर्द को महसूस करता है, तो उसके भीतर से लिखने की एक सच्ची इच्छा जाग उठती है। बाहरी दबाव ने उसकी आंतरिक भावना को जगा दिया।

» रचनाकार का स्वभाव और आत्मानुशासन

प्रश्न 9 (आसान). रचनाकार के संदर्भ में 'बाहरी दबाव' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर – बाहरी दबाव का अर्थ है किसी संपादक का कहना, प्रकाशन की समय-सीमा, या किसी विषय पर लिखने का अनुरोध।

प्रश्न 10 (आसान). क्या सभी रचनाकार बाहरी दबाव पर निर्भर करते हैं?
उत्तर – नहीं, कुछ रचनाकार अपनी आंतरिक विवशता से ही लिखते हैं, जबकि कुछ आलसी स्वभाव के रचनाकार बाहरी दबाव को सहायक यंत्र के रूप में इस्तेमाल करते हैं।

प्रश्न 11 (मध्यम). रचनाकार का 'आत्मानुशासन' लेखन प्रक्रिया में कैसे सहायक होता है?
उत्तर – आत्मानुशासन लेखक को बाहरी दबाव के बावजूद या आलस्य के बावजूद, नियमित रूप से लिखने और अपनी अंदरूनी भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करता है।

प्रश्न 12 (कठिन). लेखक अज्ञेय के अनुसार, बाहरी दबाव और आंतरिक विवशता के बीच क्या संबंध है?
उत्तर – अज्ञेय मानते हैं कि आंतरिक विवशता ही मुख्य प्रेरक शक्ति है। बाहरी दबाव सिर्फ एक सहायक यंत्र है जो कुछ लेखकों को, खासकर आलसी स्वभाव वालों को, अपनी आंतरिक विवशता को व्यक्त करने में मदद करता है।

» अनुभव बनाम अनुभूति: हिरोशिमा का उदाहरण

प्रश्न 13 (आसान). अनुभव और अनुभूति में मुख्य अंतर क्या है?
उत्तर – अनुभव बाहरी ज्ञान या जानकारी है, जबकि अनुभूति किसी बात को गहराई से महसूस करना है।

प्रश्न 14 (आसान). लेखक ने 'हिरोशिमा' कविता किसके बाद लिखी?
उत्तर – जापान जाकर हिरोशिमा के पीड़ितों को प्रत्यक्ष देखने और महसूस करने के बाद।

प्रश्न 15 (मध्यम). लेखक के लिए 'हिरोशिमा' पर कविता लिखने की असली प्रेरणा क्या थी - पुस्तकीय ज्ञान या प्रत्यक्ष अनुभूति?
उत्तर – लेखक के लिए 'हिरोशिमा' पर कविता लिखने की असली प्रेरणा 'प्रत्यक्ष अनुभूति' थी, जो उन्हें जापान जाकर पीड़ितों को देखकर मिली। पुस्तकीय ज्ञान या समाचार पढ़कर उन्हें सिर्फ जानकारी मिली थी, गहरी भावना नहीं।

प्रश्न 16 (कठिन). लेखक ने युद्ध के दौरान ब्रह्मपुत्र में मछलियाँ मरते देखी थीं, तो क्या यह अनुभव हिरोशिमा पर कविता लिखने के लिए पर्याप्त था? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।
उत्तर – नहीं, ब्रह्मपुत्र में मछलियों का मरना देखना हिरोशिमा पर कविता लिखने के लिए पर्याप्त नहीं था। यह उन्हें जीव-नाश का 'अनुभव' तो दे रहा था, लेकिन यह हिरोशिमा जैसे परमाणु हमले की पूरी विभीषिका और मानव पीड़ा की 'अनुभूति' नहीं करा पाया। हिरोशिमा के पीड़ितों की व्यक्तिगत पीड़ा देखकर ही उन्हें वह गहरी भावनात्मक जुड़ाव महसूस हुआ जिसकी वजह से उन्होंने कविता लिखी।

» अनुभूति-प्रत्यक्ष की गहराई

प्रश्न 17 (आसान). 'अनुभव' और 'अनुभूति' में क्या मुख्य अंतर है?
उत्तर – 'अनुभव' वह है जो घटित होता है, 'अनुभूति' उसे संवेदना और कल्पना से महसूस करना है।

प्रश्न 18 (आसान). लेखक के 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' में अणु-विस्फोट कब आया?
उत्तर – हिरोशिमा की सड़क पर एक जले हुए पत्थर पर बनी उजली छाया देखकर।

प्रश्न 19 (मध्यम). लेखक के अनुसार 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' के लिए कौन सी दो चीजें जरूरी हैं?
उत्तर – संवेदना और कल्पना।

प्रश्न 20 (कठिन). क्या 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' के बिना एक सफल रचना लिखी जा सकती है? तर्क सहित उत्तर दें।
उत्तर – नहीं, लेखक के अनुसार 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' ही रचना की गहराई और सच्चाई है। बिना इसके रचना में वो असर और सच्चाई नहीं आ पाती।

» हिरोशिमा की त्रासदी का व्यक्तिगत अनुभव

प्रश्न 21 (आसान). लेखक ने हिरोशिमा में क्या देखा जिसने उन्हें गहराई से प्रभावित किया?
उत्तर – एक जले हुए पत्थर पर पड़ी मानव आकृति की परछाई।

प्रश्न 22 (आसान). लेखक को उस परछाई को देखकर कैसा महसूस हुआ?
उत्तर – उन्हें लगा जैसे किसी ने थप्पड़ मारा हो, और वे अणु-विस्फोट के भोक्ता बन गए हों।

प्रश्न 23 (मध्यम). 'अणु-विस्फोट मेरे अनुभूति-प्रत्यक्ष में आ गया' - इस पंक्ति का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि लेखक ने अणु-विस्फोट के दर्द को केवल सुना या पढ़ा नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से इतनी गहराई से महसूस किया, जैसे वह उनके साथ स्वयं घटित हुआ हो।

प्रश्न 24 (कठिन). हिरोशिमा की घटना ने लेखक में किस प्रकार की 'विवशता' जागृत की, जिससे कविता का जन्म हुआ?
उत्तर – हिरोशिमा की परछाई ने लेखक को भीतर तक बेचैन कर दिया। यह सिर्फ़ बौद्धिक समझ नहीं थी, बल्कि हृदय की गहरी संवेदना थी जो उन्हें शब्दों के माध्यम से इस त्रासदी को व्यक्त करने के लिए मजबूर कर रही थी। यही आंतरिक बेचैनी और अनिवार्यता 'विवशता' थी।

» अनुभूति-प्रसूत लेखन का महत्व

प्रश्न 25 (आसान). लेखक के अनुसार, किसी भी रचना की सबसे महत्वपूर्ण बात क्या है?
उत्तर – उसका 'अनुभूति-प्रसूत' होना, यानी लेखक के अपने सच्चे अनुभवों से निकली होना।

प्रश्न 26 (आसान). अगर कोई रचना सिर्फ़ सुनी-सुनाई बातों पर आधारित हो, तो क्या वह प्रभावशाली होगी?
उत्तर – नहीं, वह उतनी प्रभावशाली नहीं होगी क्योंकि उसमें लेखक की सच्ची अनुभूति नहीं होगी।

प्रश्न 27 (मध्यम). आप अपनी पसंदीदा कहानी या कविता के बारे में सोचकर बताइए कि उसमें आपको लेखक की 'अनुभूति' कहाँ महसूस होती है?
उत्तर – इसमें बच्चे अपनी पसंद की रचना का उदाहरण देंगे और बताएंगे कि कैसे लेखक के शब्दों या पात्रों के माध्यम से उन्हें लेखक की सच्ची भावनाएँ या अनुभव महसूस हुए।

प्रश्न 28 (कठिन). एक पत्रकार और एक कवि, दोनों एक ही घटना (जैसे किसी बड़ी दुर्घटना) पर लिख रहे हैं। दोनों के लेखन में 'अनुभूति-प्रसूत' होने के संदर्भ में क्या अंतर हो सकता है?
उत्तर – पत्रकार शायद तथ्यों और रिपोर्टिंग पर ज़्यादा ध्यान देगा, जिसमें उसकी निजी अनुभूति कम हो सकती है। वहीं, कवि उस घटना के मानवीय पहलुओं, दर्द, भावनाओं और गहरे अर्थों पर ध्यान केंद्रित करेगा, जो उसकी अपनी गहरी अनुभूति से निकले होंगे और इसीलिए ज़्यादा मार्मिक और 'अनुभूति-प्रसूत' होंगे।

» अज्ञेय की कविता 'हिरोशिमा'

प्रश्न 29 (आसान). कविता में 'सूरज' किसका प्रतीक है?
उत्तर – कविता में 'सूरज' अणु-बम या उस विनाशकारी ऊर्जा का प्रतीक है जिसे मानव ने बनाया है।

प्रश्न 30 (आसान). 'फटी मिट्टी से' धूप बरसने का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि विनाशकारी प्रकाश या ऊर्जा आसमान से नहीं, बल्कि ज़मीन पर हुए अणु-बम विस्फोट से निकली।

प्रश्न 31 (मध्यम). कविता में 'काल-सूर्य' किसे कहा गया है और क्यों?
उत्तर – 'काल-सूर्य' अणु-बम को कहा गया है क्योंकि वह सूर्य की तरह प्रचंड ऊर्जा वाला था, लेकिन उसका काम जीवन देना नहीं, बल्कि काल (मृत्यु) लाना था।

प्रश्न 32 (कठिन). अज्ञेय ने कविता में 'मानव की साखी' किसे कहा है और इसके पीछे क्या संदेश है?
उत्तर – अज्ञेय ने 'पत्थर पर लिखी हुई यह जली हुई छाया' को 'मानव की साखी' कहा है। इसके पीछे संदेश यह है कि ये परछाइयाँ उस भीषण त्रासदी की मूक गवाह हैं, जो मानव निर्मित विनाश की भयावहता और विज्ञान के दुरुपयोग का प्रमाण देती हैं, ताकि भविष्य में ऐसी गलती न दोहराई जाए।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. लेखक के लिए 'आंतरिक विवशता' का क्या अर्थ है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?

› पहला कदम यह समझना है कि 'आंतरिक' का मतलब है 'अंदरूनी', यानी लेखक के अपने भीतर से उठने वाली चीज़।

› दूसरा कदम 'विवशता' का अर्थ जानना है, यानी कोई ऐसी चीज़ जो आपको कुछ करने के लिए मजबूर करे, जिसे टाला न जा सके।

› तो 'आंतरिक विवशता' हुई लेखक के मन में उठने वाली वो प्रबल इच्छा या बेचैनी जो उसे कुछ लिखने के लिए प्रेरित करती है।

› यह महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि यही वह मूल कारण है जिससे लेखक को लिखने की प्रेरणा मिलती है, न कि सिर्फ बाहरी दिखावे या फ़ायदे के लिए।

उत्तर – आंतरिक विवशता लेखक के मन की वह गहरी और प्रबल इच्छा या बेचैनी है जो उसे लिखने के लिए प्रेरित करती है, ताकि वह अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त कर सके और स्वयं को समझ सके। यह लेखन का सबसे महत्वपूर्ण और सच्चा कारण है।

उदाहरण 2. लेखक 'अज्ञेय' को किस बाहरी दबाव के कारण 'मैं क्यों लिखता हूँ' जैसा निबंध लिखना पड़ा होगा, और उस दबाव ने उन्हें कैसे मदद की?

› पाठ में बताया गया है कि लेखक को 'संपादक के आग्रह' और 'प्रकाशक के तकाजे' के कारण लिखना पड़ता है।

› तो 'मैं क्यों लिखता हूँ' निबंध लिखने का एक बाहरी दबाव संपादक या प्रकाशक का आग्रह हो सकता है।

› इस बाहरी दबाव ने लेखक को अपने लेखन के 'आंतरिक कारणों' पर गहराई से सोचने पर मजबूर किया।

› नतीजा यह हुआ कि यह बाहरी दबाव, उनके भीतर की 'मैं क्यों लिखता हूँ' जानने की जिज्ञासा को बाहर लाने का 'निमित्त' बन गया।

› उन्होंने अपने अंदर की प्रेरणा को बेहतर ढंग से समझा और एक महत्वपूर्ण निबंध लिखा।

उत्तर – लेखक 'अज्ञेय' को संपादक या प्रकाशक के आग्रह (बाहरी दबाव) के कारण यह निबंध लिखना पड़ा होगा। इस दबाव ने उन्हें अपनी आंतरिक प्रेरणा को पहचानने और उसे शब्दों में ढालने में मदद की, जिससे यह निबंध उनके आंतरिक विचार का निमित्त बन गया।

उदाहरण 3. कक्षा में एक नाटक लिखना है। तुम्हारा स्वभाव कैसा होना चाहिए कि तुम उसे पूरा कर पाओ, भले ही मन न कर रहा हो?

› सबसे पहले अपनी 'आंतरिक विवशता' को पहचानो - नाटक लिखने की इच्छा है, कुछ कहना चाहते हो।

› अब देखो कि 'बाहरी दबाव' क्या है - कक्षा में देना है, टीचर ने कहा है, या दोस्तों के साथ मिलकर बनाना है।

› अपने 'आत्मानुशासन' का प्रयोग करो। अगर आलस आ रहा है, तो बाहरी दबाव (जैसे डेडलाइन या दोस्तों का साथ) को एक 'सहायक यंत्र' मानो।

› निश्चित समय तय करो, रोज़ थोड़ा-थोड़ा लिखो, और तय समय पर नाटक पूरा कर लो।

उत्तर – कक्षा में नाटक पूरा करने के लिए आंतरिक इच्छा के साथ-साथ आत्मानुशासन और बाहरी दबाव को एक सहायक यंत्र के रूप में इस्तेमाल करना ज़रूरी है।

उदाहरण 4. लेखक ने हिरोशिमा पर कविता तुरंत क्यों नहीं लिखी, जबकि उन्हें अणु बम के बारे में जानकारी और युद्ध का अनुभव था?

› लेखक को अणु बम के बारे में 'पुस्तकीय ज्ञान' (किताबों से मिली जानकारी) थी।

› उन्होंने हिरोशिमा में हुए विनाश के 'समाचार पढ़े' और उसके प्रभावों का विवरण भी जाना।

› उन्होंने युद्ध के दौरान सैनिकों को ब्रह्मपुत्र में बम फेंककर मछलियाँ मारते देखा था, जिससे उन्हें 'जीव-नाश का अनुभव' हुआ था।

› लेकिन इन सभी अनुभवों के बावजूद, उन्हें 'अनुभूति' के स्तर पर वैसी गहराई नहीं मिली थी कि वो कविता लिख सकें।

› जब लेखक जापान गए और हिरोशिमा में उन पीड़ितों को देखा जो रेडियम के प्रभाव से बरसों से कष्ट झेल रहे थे, तब उन्हें वास्तविक 'अनुभूति' हुई।

› इस 'प्रत्यक्ष अनुभव' और 'गहरी अनुभूति' के बाद ही उन्होंने 'हिरोशिमा' कविता लिखी।

› तो, सिर्फ जानकारी या बाहरी अनुभव काफी नहीं थे; सच्ची भावनात्मक जुड़ाव यानी अनुभूति की कमी थी।

उत्तर – लेखक ने हिरोशिमा पर कविता तुरंत इसलिए नहीं लिखी क्योंकि सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान और युद्ध के अनुभवों से

उन्हें उस घटना की गहरी 'अनुभूति' नहीं हुई थी। वास्तविक अनुभूति उन्हें जापान जाकर पीड़ितों को देखकर हुई, जिसके बाद ही कविता लिखने की प्रेरणा मिली।

उदाहरण 5. लेखक ने हिरोशिमा की कविता जापान में नहीं, भारत लौटकर, रेलगाड़ी में बैठकर लिखी। इस घटना से 'अनुभूति-प्रत्यक्ष की गहराई' को स्पष्ट कीजिए।

› पहला चरण: लेखक हिरोशिमा जाकर बम से हुए विनाश को देखते हैं, लेकिन तुरंत कुछ नहीं लिख पाते। यह 'अनुभव' था, लेकिन 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' नहीं हुआ था।

› दूसरा चरण: भारत लौटकर, एक दिन लेखक सड़क पर जले हुए पत्थर पर बनी 'उजली छाया' देखते हैं। यह 'छाया' उस व्यक्ति की थी जो विस्फोट के समय वहाँ खड़ा था और भाप बन गया था।

› तीसरा चरण: इस छाया को देखकर लेखक को 'एक थप्पड़-सा' लगता है। वह 'अवाक् इतिहास' उनके भीतर एक 'जलते हुए सूर्य' सा उग आता है।

› चौथा चरण: इस क्षण में अणु-विस्फोट लेखक के 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' में आ जाता है। उन्हें लगता है जैसे वे स्वयं उस विस्फोट के 'भोक्ता' बन गए हों, यानी उन्होंने खुद उसे भोगा हो।

› पांचवां चरण: इसी 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' की गहराई के कारण लेखक को लिखने की विवशता महसूस होती है और वह भारत लौटकर, रेलगाड़ी में बैठकर हिरोशिमा पर कविता लिखते हैं।

उत्तर – लेखक के लिए हिरोशिमा की घटना सिर्फ़ एक अनुभव नहीं रही, बल्कि जलती हुई छाया देखकर उन्हें उस विनाश का 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' हुआ, जैसे उन्होंने स्वयं उसे भोगा हो, और यही गहराई कविता लिखने का कारण बनी।

उदाहरण 6. लेखक को हिरोशिमा की त्रासदी का 'भोक्ता' कैसे बनना पड़ा? स्पष्ट कीजिए।

› लेखक ने हिरोशिमा में एक जले हुए पत्थर पर एक मानव आकृति की परछाई देखी।

› उन्होंने अनुमान लगाया कि विस्फोट के समय कोई व्यक्ति उस पत्थर के सामने खड़ा रहा होगा, जो अणु बम की गर्मी से भाप बनकर उड़ गया, लेकिन उसकी परछाई पत्थर पर छप गई।

› इस दृश्य ने लेखक को भीतर तक झकझोर दिया, उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उन्होंने स्वयं उस विस्फोट का दर्द भोगा हो।

› यह अनुभव इतना गहरा था कि उनकी बुद्धि से बढ़कर उनकी संवेदना में उतर गया, जिससे उन्हें आंतरिक 'विवशता' और 'आकुलता' महसूस हुई।

उत्तर – लेखक को उस परछाई को देखकर इतना गहरा सदमा लगा कि उन्हें लगा, वे स्वयं अणु-विस्फोट के भुक्तभोगी हैं और इसी कारण वे उस त्रासदी के 'भोक्ता' बन गए।

उदाहरण 7. मान लीजिए एक लेखक ने किसी गाँव में आई बाढ़ के बारे में एक कहानी लिखी है। अगर उसने खुद बाढ़ का मंज़र देखा हो और गाँववालों की तकलीफ महसूस की हो, तो उसकी कहानी में क्या अंतर आएगा?

› पहला कदम: लेखक के अनुभव पर विचार करें। अगर उसने सिर्फ़ टीवी पर बाढ़ की खबरें देखी हैं, तो उसका अनुभव 'प्रत्यक्ष' तो है, पर शायद उतना गहरा नहीं।

› दूसरा कदम: अगर लेखक ने खुद उस बाढ़ में रहकर लोगों को जूझते देखा है, उनकी मदद की है, तो उसका अनुभव बहुत गहरा, 'अनुभूति-प्रसूत' होगा।

› तीसरा कदम: जब लेखक ने बाढ़ को 'भोगा' है, तो उसकी कहानी में सिर्फ़ घटनाएँ नहीं होंगी, बल्कि वो डर, बेबसी, हिम्मत और उम्मीद भी महसूस होगी जो गाँववालों ने सही थी।

› चौथा कदम: ऐसी कहानी पाठकों के दिल को सीधे छू लेगी, क्योंकि उसमें लेखक की सच्ची भावनाएँ और अनुभव होंगे।

› अंतिम कदम: यह अंतर 'अनुभूति-प्रसूत' लेखन के महत्व को दर्शाता है।

उत्तर – जिस लेखक ने खुद बाढ़ का मंज़र देखा और महसूस किया है, उसकी कहानी में गाँववालों की सच्ची भावनाएँ, उनका दर्द, उनकी संघर्ष शक्ति और उम्मीदें जीवंत हो उठेंगी। पाठक उस कहानी से ज़्यादा जुड़ाव महसूस करेंगे और वो सिर्फ़ एक घटना का वर्णन न रहकर एक मार्मिक अनुभव बन जाएगी।

उदाहरण 8. कविता की पंक्तियों 'छायाएँ मानव-जन की दिशाहीन सब ओर पड़ीं... मानव ही सब भाप हो गए' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

› पहले कविता की पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें: 'छायाएँ मानव-जन की दिशाहीन सब ओर पड़ीं... मानव ही सब भाप हो गए।'

› पहली पंक्ति का मतलब है कि अणु बम फटने के बाद, लोगों की परछाइयाँ दीवारों और पत्थरों पर हमेशा के लिए छप गईं। ये परछाइयाँ दिशाहीन इसलिए थीं क्योंकि वे किसी एक दिशा में नहीं बल्कि जहाँ थे, वहीं स्थिर हो गईं, जैसे उन्हें चलने का मौका ही नहीं मिला।

› दूसरी पंक्ति 'मानव ही सब भाप हो गए' का मतलब है कि अणु-बम की भीषण गर्मी से इंसान पल भर में जलकर भाप बन गए, उनका शरीर बचा ही नहीं।

› तो इन पंक्तियों से अज्ञेय जी यह बताना चाहते हैं कि अणु बम ने इतनी तेज़ी से तबाही मचाई कि लोगों को भागने या समझने का मौका भी नहीं मिला। उनकी परछाइयाँ तो पत्थरों पर छप गईं, लेकिन वे खुद ही खत्म हो गए। ये विज्ञान के ऐसे दुरुपयोग को दिखाता है जहाँ जीवन का कोई मूल्य नहीं रहा।

उत्तर – इन पंक्तियों का अर्थ है कि हिरोशिमा में अणु-बम के विस्फोट से उत्पन्न अत्यधिक गर्मी के कारण लोग क्षण भर में भाप बनकर उड़ गए, लेकिन उनकी परछाइयाँ (छायाएँ) पत्थरों और दीवारों पर हमेशा के लिए अंकित हो गईं, जो उस भीषण त्रासदी की स्थायी निशानी बन गईं। यह मानव द्वारा रचित विनाश की भयावहता को दर्शाता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• बोर्ड परीक्षा में अक्सर इस पर सीधे प्रश्न आते हैं कि लेखक के 'लिखने के कारणों' में आंतरिक विवशता की क्या भूमिका है। इसे अच्छे से तैयार कर लेना।

• इस पाठ में से लेखक अज्ञेय के निजी विचारों पर आधारित प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर 'आंतरिक विवशता' और 'बाहरी दबाव' के बीच के संबंध को स्पष्ट करने वाले।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'भाव स्पष्ट कीजिए' या 'लेखक की मनःस्थिति' से जुड़े प्रश्नों में पूछा जाता है। अनुभव और अनुभूति के अंतर को स्पष्ट रूप से समझकर उत्तर दें।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'अनुभव', 'अनुभूति' और 'अनुभूति-प्रत्यक्ष' के अंतर को स्पष्ट करने वाले प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर 'हिरोशिमा' कविता के संदर्भ में।

• यह अंश बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि 'लेखक हिरोशिमा की त्रासदी का भोक्ता कैसे बना' या 'कविता लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली'। इसे ध्यान से समझना।

• इस कविता से जुड़े प्रतीकात्मक अर्थों (जैसे 'सूरज', 'काल-सूर्य', 'छायाएँ') को समझना और उनकी व्याख्या करना परीक्षा में महत्वपूर्ण है।

एक नज़र में रिवीज़न

› लेखन की आंतरिक विवशता: लेखक के अंदर से लिखने की प्रबल प्रेरणा और स्वयं को समझने की इच्छा।

› रचनाकार का स्वभाव + आत्मानुशासन + बाहरी दबाव = लेखन

› लेखन की प्रेरणा: केवल अनुभव नहीं, गहरी 'अनुभूति' है मुख्य आधार।

› अ-घटित को भी संवेदना+कल्पना से आत्मसात् करना = अनुभूति-प्रत्यक्ष।

› हिरोशिमा पत्थर पर मानव छाया देखकर लेखक को त्रासदी का व्यक्तिगत अनुभव हुआ, जिससे कविता की प्रेरणा मिली।

› अज्ञेय की 'हिरोशिमा': विज्ञान के दुरुपयोग, मानवीय त्रासदी, अमर छायाएँ।